खेल विभाग
बिहार सरकार

FENCING

तलवारबाजी

अनुक्रमणिका

क्र0	विषय	पृष्ठ सं0
1.	तलवारबाजी का इतिहास	3–4
2.	नियम	5–6
3.	मार्किंग	7–8
4.	स्कोर शीट	9
5.	उपस्कर	10–12
6.	तलवारबाजी में उपयोग होने वाले शब्द	13–14
7.	संघ	15
8.	प्रतियोगिताएँ	16–17
9.	भारत और बिहार के खिलाड़ियों का प्रदर्शन	18–19
10.	**FAQ**	20–21

तलवारबाजी का इतिहास

तलवारबाजी (fencing) एक मुकाबला वाला खेल है जिसमें खिलाड़ी नकली तलवारों का इस्तेमाल करते हैं। यह एक कला और खेल का मिश्रण है, जिसमें खिलाड़ियों को अपनी फुर्ती, गति और सटीकता का प्रदर्शन करना होता है।
इस खेल में, दो खिलाड़ी एक–दूसरे के सामने एक संकरी पट्टी पर खड़े होते हैं और एक–दूसरे पर अपनी तलवार से वार करते हैं। जिस खिलाड़ी की तलवार प्रतिद्वंदी के शरीर पर सही जगह छू जाती है, उसे अंक मिलते हैं।

आधुनिक तलवारबाजी के तीन मुख्य प्रकार हैं:

- फॉइल (Foil): इस प्रकार में, खिलाड़ी को केवल प्रतिद्वंदी के धड़ (torso) पर ही वार करने की अनुमति होती है।
- एपे (Epee): इसमें खिलाड़ी प्रतिद्वंदी के शरीर पर कहीं भी (सिर से पैर तक) वार कर सकते हैं।
- सेबर (Sabre): इस प्रकार में खिलाड़ी प्रतिद्वंदी के शरीर के ऊपरी हिस्से (कमर के ऊपर) पर वार कर सकते हैं, और वार तलवार की धार और नोंक दोनों से किया जा सकता है।

तलवारबाजी एक ऐसा खेल है जिसमें मानसिक और शारीरिक चपलता दोनों का ही बहुत महत्व होता है।

तलवारबाजी, जिसे आधुनिक खेलों में 'फेंसिंग' (Fencing) कहा जाता है, एक रोमांचक और तेज–तर्रार खेल है जिसमें दो खिलाड़ी एक दूसरे से तलवार से मुकाबला करते हैं। इसके नियम मुख्य रूप से तीन प्रकार की तलवारों के आधार पर विभाजित होते हैं: एपि (Epee), फॉइल (Foil) और साबरे (Sabre)। हर तलवार का अपना अलग नियम होता है। आइए, इन तीनों के नियमों को विस्तार से समझते हैं:

1. एपि (Epee)

- तलवारः यह तीनों तलवारों में सबसे भारी होती है। इसमें केवल तलवार की नोक से ही वार किया जा सकता है।
- टारगेट एरिया (वार करने का क्षेत्र): पूरा शरीर (सिर से पैर तक) वार करने का वैध क्षेत्र होता है।
- स्कोरिंग (अंक प्रणाली): जो भी खिलाड़ी पहले वार करता है, उसे अंक मिलता है। इसमें 'राइट ऑफ वे' (Right of Way) का कोई नियम नहीं होता। अगर दोनों खिलाड़ी एक साथ वार करते हैं, तो दोनों को अंक मिल सकता है (इसे 'डबल हिट' कहते हैं)।

2. फॉइल (Foil)

- तलवारः यह एक हल्की और लचीली तलवार होती है। इसमें भी केवल तलवार की नोक से ही वार किया जा सकता है।
- टारगेट एरिया (वार करने का क्षेत्र): वार करने का क्षेत्र केवल धड़ (Torso) होता है। हाथ, पैर, या सिर पर किया गया वार अमान्य माना जाता है।
- स्कोरिंग (अंक प्रणाली): इसमें 'राइट ऑफ वे' का नियम लागू होता है। इसका मतलब है कि अंक उस खिलाड़ी को मिलता है जिसने पहले आक्रमण शुरू किया हो। रेफरी यह तय करता है कि किसने पहले आक्रमण किया।

3. साबरे (Sabre)

- तलवारः यह काटने और वार करने वाली दोनों तरह की तलवार है। इसमें तलवार की नोक के साथ–साथ ब्लेड के किनारे से भी वार किया जा सकता है।
- टारगेट एरिया (वार करने का क्षेत्र): कमर से ऊपर का पूरा हिस्सा (सिर, धड़ और हाथ) वार करने का वैध क्षेत्र होता है।
- स्कोरिंग (अंक प्रणाली): फॉइल की तरह, इसमें भी 'राइट ऑफ वे' का नियम होता है। जो खिलाड़ी पहले आक्रमण शुरू करता है, उसे अंक मिलता है।

तलवारबाजी के सामान्य नियम

पिस्ट :— तलवारबाज़ी का मुकाबला एक पट्टी या पिस्ट पर होता हैए जो वर्तमान FIE नियमों के अनुसार 1.5 से 2 मीटर चौड़ा और 14 मीटर (46 फीट) लंबा होना चाहिए । मध्य बिंदु से दो मीटर (6.6 फीट) की दूरी पर दो एन-गार्डे रेखाएँ (जहाँ तलवारबाज़ मुकाबले की शुरुआत में खड़े होते हैं) होती हैं। पट्टी के दोनों छोर से दो मीटर की दूरी पर दो चेतावनी रेखाएँ भी होती हैंए ताकि पीछे हटने वाले तलवारबाज़ों को पिस्ट पर अपनी स्थिति का पता चल सके। पट्टी से पीछे हटने पर प्रतिद्वंद्वी को एक टच मिलता है।

स्कोरिंग सिस्टम:—

1. फ़ेंसर एक विद्युत स्कोरिंग सिस्टम से जुड़ते हैं।
2. लाल और हरी बत्तियाँ: लक्ष्य क्षेत्रों पर वैध हिट दर्शाती हैं।
3. सफ़ेद बत्तियाँ: केवल फ़ॉइल में लक्ष्य से बाहर हिट दर्शाती हैं।
4. रेफ़री हिट की वैधता तय करता है और अंक प्रदान करता है।

आक्रमण:— तलवारबाज़ी की एक बुनियादी तकनीक जिसे थ्रस्ट भी कहा जाता है जिसमें हाथ बढ़ाकर और प्रतिद्वंद्वी के लक्ष्य पर लगातार हमला करके की जाने वाली प्रारंभिक आक्रामक क्रिया शामिल होती है। इसके चार अलग-अलग प्रकार के आक्रमण होते हैं (सीधा प्रहारए डिसएंगेज आक्रमण प्रति-डिसएंगेज आक्रमण और कटओवर)। सेबर में काटने की क्रिया से भी आक्रमण किए जाते हैं।

पैरी:— एक बुनियादी रक्षा तकनीक जिसमें प्रतिद्वंद्वी के हथियार को तब रोका जाता है जब वह हमले की तैयारी कर रहा हो या उसे अंजाम दे रहा हो ताकि तलवारबाज़ के हथियार का ब्लेड तलवारबाज़ के वैध क्षेत्र से दूर हो जाए और (फ़ॉइल और सेबर में) तलवारबाज़ को रास्ता देने का अधिकार मिल जाए। आमतौर पर इसके बाद रिपोस्ट होता है यानी रक्षक द्वारा किया जाने वाला जवाबी हमला।

व्यक्तिगत मैच —

पूल मुकाबले: पूल राउंड में प्रत्येक मुकाबला 5 हिट या 3 मिनट की एक अवधि तक फेंसिंग के लिए होता है। यदि समय समाप्त होने पर कोई भी फेंसर 5 हिट तक नहीं पहुँचता है तो मुकाबला समाप्त हो जाता है और अधिक स्कोर करने वाले फेंसर को विजेता घोषित किया जाता है। यदि स्कोर बराबर हो जाता हैए तो बराबरी दर्ज की जाती है। प्रत्येक मुकाबले के अंत मेंए दोनों फेंसरों द्वारा बनाए गए हिट की संख्या भी दर्ज की जाती है।

डायरेक्ट एलिमिनेशन मुकाबले: नॉकआउट चरण में प्रत्येक मुकाबला तब तक जारी रहता है जब तक कि एक फेंसर 15 हिट नहीं बना लेता या 9 मिनट का कुल फेंसिंग समय (तीन 3.मिनट की अवधि में विभाजित) समाप्त नहीं हो जाता। प्रत्येक अवधि के बीच 1 मिनट का ब्रेक होता है। जब भी कार्रवाई रुकती है जैसे कि वैध हिट के बाद घड़ी रुक जाती है। यदि तीसरे पीरियड के अंत में स्कोर बराबर हो जाता है तो 1 मिनट का अचानक-मृत्यु ओवरटाइम अवधि फेंसिंग के लिए होती है। पहला वैध हिट विजेता का फैसला करता है यदि कोई हिट नहीं बनता है तो प्राथमिकता वाला फेंसर (ड्रा द्वारा निर्धारित) जीत जाता है।

टीम मैच :–

प्रत्येक टीम आमतौर पर तीन तलवारबाज़ों (साथ ही एक स्थानापन्न) को मैदान में उतारती है। एक मैच में लगातार नौ मुकाबले होते हैं जिसमें एक टीम का प्रत्येक तलवारबाज़ एक पूर्व निर्धारित रोटेशन में विरोधी टीम के प्रत्येक तलवारबाज़ से भिड़ता है। स्कोरिंग संचयी होती है जो आम तौर पर प्रति मुकाबले पाँच हिट तक की वृद्धि में बढ़ती है जब तक कि एक टीम 45 हिट तक नहीं पहुँच जाती या समय समाप्त नहीं हो जाता। यदि अंतिम मुकाबले के अंत में बराबरी हो जाती है तो 1 मिनट का अचानक-मृत्यु काल होता है पहला वैध हिट जीतता है या यदि कोई हिट नहीं होता है तो प्राथमिकता वाली टीम (ड्रा द्वारा तय) जीत जाती है।

मुकाबले की प्रगति:

तैयारी: तलवारबाज़ स्कोरिंग उपकरण और परीक्षण उपकरण से जुड़ते हैं।

सलामी: सम्मान के प्रतीक के रूप में आदान-प्रदान।

शुरुआत: रेफरी द्वारा दिए गए आदेश "ऑन गार्ड" षेडी" ष्प्ले" (या "फेंस") हैं।

आदान-प्रदान: तलवारबाज़ी के वाक्यांशों का प्रयोग रेफरी महत्वपूर्ण क्रियाओं को रोकने और स्कोर को अपडेट करने के लिए "हॉल्ट" कहता है।

रुकने के कारण: पिस्ट से बाहर निकलना शारीरिक संपर्क अमान्य क्रियाएँ या सुरक्षा संबंधी मुद्दे शामिल हैं।

पुनः आरंभ: स्थिति के आधार पर मुकाबला रुकने के बिंदु से या ऑन-गार्ड लाइनों से पुनः आरंभ होता है।

समाप्ति: जीत का अंतर पूरा होने या समय समाप्त होने पर मुकाबला समाप्त हो जाता है। बराबरी की स्थिति में अचानक-मृत्यु बिंदु के लिए एक अतिरिक्त मिनट खेला जाता है।

मार्किंग

1. एपि (Epee)

एपि तलवारबाजी में अंक हासिल करना सबसे सीधा होता है।

- वार का तरीकाः इसमें सिर्फ तलवार की नोक (tip) से ही वार किया जा सकता है।
- लक्ष्य क्षेत्र (Target Area): पूरे शरीर (सिर से पैर तक) पर किया गया कोई भी वार मान्य होता है।
- अंक प्रणालीः
  - जिस खिलाड़ी ने पहले वार किया, उसे अंक मिलता है।
  - इसमें 'राइट ऑफ वे' (Right of Way) का कोई नियम नहीं होता।
  - अगर दोनों खिलाड़ी एक ही समय में (40 मिलीसेकंड के अंदर) एक दूसरे पर वार करते हैं, तो दोनों को अंक मिलता है (इसे 'डबल हिट' कहते हैं)।
  - अंकों को एक इलेक्ट्रॉनिक स्कोरिंग सिस्टम से रिकॉर्ड किया जाता है, जिसमें वार होने पर लाइट जलती है।

2. फॉइल (Foil)

फॉइल तलवारबाजी में मार्किंग के नियम थोड़े जटिल होते हैं और इसमें 'राइट ऑफ वे' का नियम सबसे महत्वपूर्ण है।

- वार का तरीकाः सिर्फ तलवार की नोक से ही वार किया जा सकता है।
- लक्ष्य क्षेत्रः केवल धड़ (जवतेव) पर किया गया वार ही मान्य होता है। हाथ, पैर या सिर पर किया गया वार मान्य नहीं होता, लेकिन इससे खेल रुक जाता है।
- अंक प्रणालीः
  - इसमें 'राइट ऑफ वे' का नियम होता है, यानी उस खिलाड़ी को अंक मिलता है जिसने पहले सही तरह से आक्रमण शुरू किया हो।
  - अगर दोनों खिलाड़ी एक ही समय में वार करते हैं, तो रेफरी यह तय करता है कि किसने 'राइट ऑफ वे' के नियम के अनुसार पहले वार किया।
  - अगर किसी खिलाड़ी ने अमान्य क्षेत्र (जैसे हाथ या पैर) पर वार किया है, तो कोई अंक नहीं दिया जाता और खेल फिर से शुरू होता है।

3. साबरे (Sabre)

साबरे सबसे तेज तलवारबाजी होती है और इसमें वार करने का तरीका अलग होता है।

- वार का तरीकाः इसमें तलवार की नोक के साथ–साथ ब्लेड के किनारे से भी वार किया जा सकता है।
- लक्ष्य क्षेत्रः कमर के ऊपर का पूरा हिस्सा (धड़, सिर और हाथ) मान्य लक्ष्य क्षेत्र है।
- अंक प्रणालीः
  - फॉइल की तरह, इसमें भी 'राइट ऑफ वे' का नियम लागू होता है।

- रेफरी उस खिलाड़ी को अंक देता है जिसने आक्रमण की शुरुआत की हो।
- क्योंकि इसमें वार और हमले बहुत तेजी से होते हैं, इसलिए रेफरी के लिए 'राइट ऑफ वे' का निर्णय लेना बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है।

सामान्य नियम

- अंक एक इलेक्ट्रॉनिक स्कोरिंग सिस्टम से दर्ज होते हैं, जिसमें खिलाड़ी के कपड़ों (कंडक्टिव जैकेट) पर वार होने से लाइट जलती है।
- व्यक्तिगत मुकाबलों में, 15 अंक हासिल करने वाला खिलाड़ी विजेता होता है।
- मुकाबला तीन मिनट के तीन राउंड में होता है। अगर समय खत्म हो जाए, तो जिस खिलाड़ी के अंक सबसे ज्यादा होते हैं, वह जीतता है।

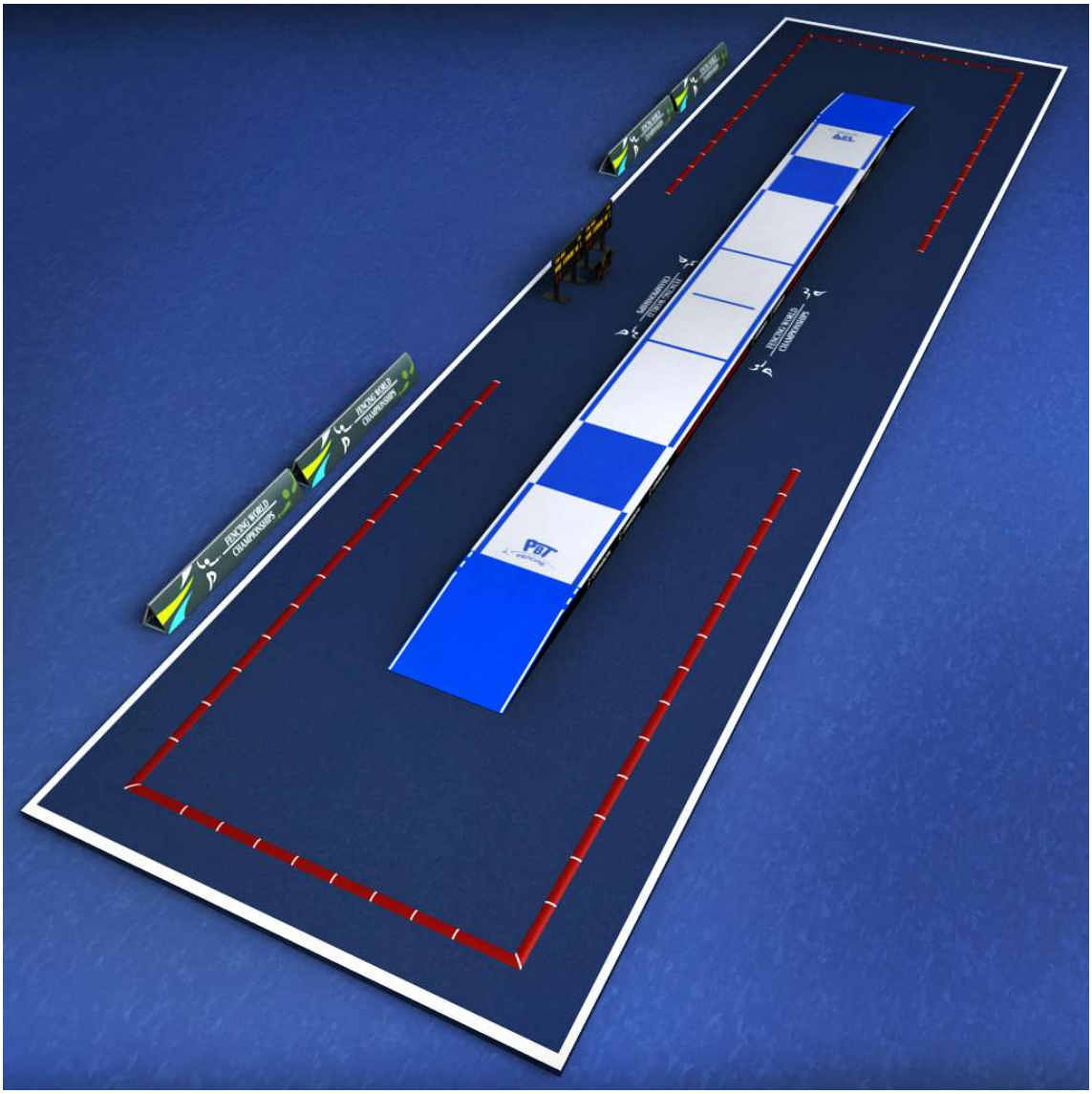

तलवारबाजी स्कोर शीट

Event _____ Director _____ Pool ____ Strip ____

	1	2	3	4	5	6	7	Init	V#	V%	TS	TR	IND	Q/E
1)	■													
2)		■												
3)			■											
4)				■										
5)					■									
6)						■								
7)							■							

4 fencers 6 bouts	1-4 2-3 1-3 2-4 3-4 1-2 0 =0% 1=33% 2=67% 3=100%
5 fencers 10 bouts	1-2 3-4 5-1 2-3 5-4 1-3 2-5 4-1 3-5 4-2 0 =0% 1=25% 2=50% 3=75% 4=100%
6 fencers 15 bouts	1-2 4-5 2-3 5-6 3-1 6-4 2-5 1-4 5-3 1-6 4-2 3-6 5-1 3-4 6-2 0=0% 1=20% 2=40% 3=60% 4=80% 5=100%
7 fencers 21 bouts	1-4 2-5 3-6 7-1 5-4 2-3 6-7 5-1 4-3 6-2 5-7 3-1 4-6 7-2 3-5 1-6 2-4 7-3 6-5 1-2 4-7 0=0% 1=17% 2=33% 3=50% 4=66% 5=84% 6=100%

खिलाड़ी के लिए सुरक्षा उपस्कर

1. जैकेट :–

   यह जैकेट आकार में फिट होती है और इसमें पैरों के बीच से गुजरने वाला एक पट्टा (क्रोइसार्ड) होता है। कॉलर के चारों ओर मुड़े हुए कपड़े का एक छोटा सा घेरा सिल दिया जाता है ताकि प्रतिद्वंद्वी का ब्लेड मास्क के नीचे और जैकेट के साथ गर्दन की ओर ऊपर की ओर फिसलने से रोका जा सके ।

2. प्लास्ट्रॉन :–

   प्लास्ट्रॉन एक अंडरआर्म प्रोटेक्टर है जिसे जैकेट के नीचे पहना जाता है। यह तलवार वाली भुजा और ऊपरी भुजा के दोनों ओर दोहरी सुरक्षा प्रदान करता है। भुजा के नीचे कोई सिलाई नहीं होती जो जैकेट की सिलाई के साथ संरेखित होकर एक कमज़ोर जगह बन जाए।

3. दस्ताना :–

   तलवार वाले हाथ को एक दस्ताने से सुरक्षित किया जाता है जिसमें एक गंटलेट होता है जो ब्लेड को आस्तीन में जाने और चोट लगने से रोकता है। यह दस्ताना पकड़ को भी बेहतर बनाता है।

4. ब्रीच :–

   ब्रीच या निकर छोटी पतलून होती हैं जो घुटनों के ठीक नीचे तक आती हैं। ब्रीच का जैकेट के साथ 10 सेमी का ओवरलैप होना ज़रूरी है। ज़्यादातर ब्रीच में सस्पेंडर्स (ब्रेसेस) लगे होते हैं।

5. मोज़े :–

   फ़ेंसिंग मोज़े घुटने को ढकने के लिए पर्याप्त लंबे होते हैं और पिंडली के स्तर पर गद्देदार सुदृढीकरण प्रदान करते हैं ताकि चोट से बचा जा सके।

6. जूते

   तलवारबाज़ी के जूतों के तले सपाट होते हैं और पिछले पैर के अंदरूनी हिस्से और अगले पैर की एड़ी में मज़बूती से लगाए जाते हैं। यह मज़बूती पैर को आगे की ओर झुकने से होने वाले घिसाव से बचाती है और पैर को चोट लगने से बचाती है (एपे फ़ेंसिंग में इस्तेमाल)।

7. मास्क

   तलवारबाज़ी के मास्क में एक बिब होता है जो गर्दन की सुरक्षा करता है। मास्क को धातु की जाली पर 12 किलोग्राम (26 पाउंड) और बिब पर 350 न्यूटन (79 lbf) का प्रवेश प्रतिरोध सहन करना चाहिए। के नियमों के अनुसारए मास्क को जाली पर 25 किलोग्राम (55 पाउंड) और बिब पर 1600 न्यूटन (360 lbf) का भार सहन करना चाहिए। कुछ आधुनिक मास्क के

सामने एक पारदर्शी छज्जा होता है। इनका उपयोग उच्च स्तरीय प्रतियोगिताओं (विश्व चैंपियनशिप आदि) में किया गया है हालाँकि 2009 में यूरोपीय जूनियर चैंपियनशिप प्रतियोगिता के दौरान छज्जा छेदने की घटना के बाद द्वारा इन्हें फ़ॉइल और एपी में प्रतिबंधित कर दिया गया है। फ़ॉइल सेबर और तीन-हथियार वाले मास्क उपलब्ध हैं ।

8. चेस्ट प्रोटेक्टर

प्लास्टिक से बना एक चेस्ट प्रोटेक्टर महिला तलवारबाजों और कभी-कभी पुरुषों द्वारा भी पहना जाता है। तलवारबाजी प्रशिक्षक भी इसे पहनते हैं क्योंकि प्रशिक्षण के दौरान उन्हें अपने छात्रों की तुलना में कहीं अधिक बार चोट लगती है। फ़ॉइल तलवारबाजी में चेस्ट प्रोटेक्टर की कठोर सतह चोट लगने की संभावना को कम करती है।

9. लामे (इलेक्ट्रीक जैकेट)

लामे विद्युत चालक पदार्थ की एक परत होती है जो फ़ॉइल और सेबर फ़ेंसिंग में फ़ेंसिंग जैकेट के ऊपर पहनी जाती है। यह लामे पूरे लक्ष्य क्षेत्र को ढक लेती है और स्कोरिंग बॉक्स द्वारा वार का पंजीकरण संभव बनाती है। एपी फ़ेंसिंग में लामे की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि लक्ष्य क्षेत्र प्रतियोगी के पूरे शरीर पर फैला होता है। सेबर फ़ेंसिंग में लामे की आस्तीन कलाई के आर-पार एक सीधी रेखा में समाप्त होती हैय फ़ॉइल फ़ेंसिंग में लामे बिना आस्तीन की होती है। स्कोरिंग दर्ज करने के लिए एक बॉडी कॉर्ड आवश्यक है। यह हथियार से जुड़कर जैकेट की आस्तीन के अंदर फिर पीठ के नीचे से होते हुए स्कोरिंग बॉक्स में प्लग करने के लिए बाहर निकलती है। सेबर और फ़ॉइल फ़ेंसिंग में बॉडी कॉर्ड लामे से भी जुड़ती है ताकि स्कोरिंग बॉक्स तक एक सर्किट बनाया जा सके ।

<u>हथियार और अन्य उपस्कर</u>

1. तलवार (Blade/Weapon): तलवारबाजी में तीन प्रकार की तलवारें होती हैं:
   - फॉइल (Foil): यह सबसे हल्की तलवार है, जिसकी लंबाई 90 सेमी होती है।
   - एपि (Epee): यह सबसे भारी और कठोर तलवार है, जिसकी लंबाई 90 सेमी होती है।
   - साबरे (Sabre): यह एक काटने और वार करने वाली तलवार है, जिसकी लंबाई 88 सेमी होती है।

2. बॉडी कॉर्ड (Body Cord): यह एक केबल होती है जो खिलाड़ी की इलेक्ट्रिक जैकेट (लेम) को रोलर से जोड़ती है, जिससे वार होने पर मशीन पर सिग्नल जाता है।

3. रोलर (Reel): यह एक केबल बॉक्स होता है जो पिस्ट (खेल के मैदान) के अंत में लगा होता है और खिलाड़ी के बॉडी कॉर्ड को स्कोरिंग मशीन से जोड़ता है।

4. स्कोरिंग मशीन (Scoring Machine): यह एक इलेक्ट्रॉनिक उपकरण है जो वार होने पर लाइट और ध्वनि से संकेत देता है, जिससे रेफरी और दर्शक स्कोर को आसानी से समझ पाते हैं।

खेल के सामान्य शब्द

- बउट (Bout): दो खिलाड़ियों के बीच होने वाला एक मुकाबला।
- पिस्ट (Piste): वह लंबा और संकरा मैदान जिस पर मुकाबला होता है। इसकी लंबाई 14 मीटर और चौड़ाई 1.5 से 2 मीटर होती है।
- मार्चिंग ऑन गार्ड (Marching on Guard): आक्रमण करते समय खिलाड़ी का आगे बढ़ना।
- ऑन गार्ड पोजीशन (On Guard Position): मुकाबला शुरू होने से पहले खिलाड़ी की शुरुआती रक्षात्मक मुद्रा।
- रिट्रीट (Retreat): पीछे हटना या रक्षात्मक मुद्रा में वापस आना।
- राइट ऑफ वे (Right of Way): फॉइल और साबरे में इस्तेमाल होने वाला एक नियम जो यह तय करता है कि किस खिलाड़ी का हमला मान्य है।
- डबल हिट (Double Hit): एपि में जब दोनों खिलाड़ी एक साथ वार करते हैं, तो इसे डबल हिट कहते हैं और दोनों को अंक मिलता है।
- फ्लश (Flush): वह वार जो स्कोरिंग मशीन पर रजिस्टर नहीं होता।
- पासिविटी (Passivity): जब कोई भी खिलाड़ी आक्रमण नहीं करता है। रेफरी खेल को रोककर खिलाड़ियों को आक्रमण करने के लिए कह सकता है।
- 'एन गार्डे' प्रेट्स एलेज़ एक फ्रांसीसी तलवारबाज़ी आदेश है जो तलवारबाज़ी मुकाबले की शुरुआत का संकेत देता है। एन गार्डे का अर्थ है सुरक्षा में रहना या रक्षात्मक स्थिति में आना प्रेट्स का अर्थ है तैयार एलेज़ का अर्थ है जाओ या शुरू करो।
- तलवारबाज़ी में हॉल्ट रेफरी द्वारा मुकाबला तुरंत रोकने का आदेश होता है। यह तब कहा जाता है जब कोई तलवारबाज़ मैदान से बाहर चला जाता हैए कोई टच स्कोर हो जाता हैए कोई नियम तोड़ा जाता हैए या जब खेल बहुत अव्यवस्थित या असुरक्षित हो जाता है। इसके बाद रेफरी स्थिति का आकलन करके यह तय करता है कि अंक दिया जाना चाहिए या नहीं और रुकने का कारण क्या है।

तकनीकों से जुड़े शब्द

- लंज (Lunge): आक्रमण करने का एक तरीका जिसमें खिलाड़ी आगे की तरफ पैर बढ़ाकर वार करता है।
- पैरी (Parry): विरोधी के वार को अपनी तलवार से रोककर अपनी रक्षा करना।
- रिपोस्ट (Riposte): जब एक खिलाड़ी अपने विरोधी के वार को पैरी करके तुरंत जवाबी हमला करता है।
- एंगुलशन (Angulation): अपनी तलवार की नोक को कोण पर झुकाकर वार करना ताकि विरोधी की पैरी से बचा जा सके।
- डिगैजमेंट (Disengagement): विरोधी की तलवार को चकमा देकर हमला करना।

उपस्करों से जुड़े शब्द

- एपि (Epee): सबसे भारी तलवार, जिसमें सिर्फ नोक से ही वार किया जा सकता है।

- फॉइल (Foil): सबसे हल्की तलवार, जिसमें सिर्फ नोक से ही वार किया जा सकता है और लक्ष्य केवल धड़ होता है।
- साबरे (Sabre): वह तलवार जिसमें नोक और ब्लेड के किनारे दोनों से वार किया जा सकता है।
- लेम (Lame): वह कंडक्टिव जैकेट जो फॉइल और साबरे के खिलाड़ियों द्वारा पहनी जाती है।
- बॉडी कॉर्ड (Body Cord): वह तार जो खिलाड़ी की जैकेट को स्कोरिंग मशीन से जोड़ता है।
- मास्क (Mask): चेहरे को बचाने वाला हेलमेट।

संघ

बिहार (राज्य स्तर)

- बिहार तलवारबाजी संघ (Bihar Fencing Association)
    - यह बिहार राज्य में तलवारबाजी खेल की गवर्निंग बॉडी है। यह राज्य और जिला स्तर पर प्रतियोगिताओं, प्रशिक्षण शिविरों और अन्य गतिविधियों का आयोजन करती है।

राष्ट्रीय (भारत)

- फेंसिंग एसोसिएशन ऑफ इंडिया (Fencing Association of India & FAI)
    - यह भारत में तलवारबाजी खेल की राष्ट्रीय गवर्निंग बॉडी है।
    - इसका गठन 1974 में हुआ था और इसे 1997 में भारत सरकार से मान्यता मिली थी।
    - FAI भारत में सीनियर, जूनियर, कैडेट और सब–जूनियर स्तर की राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं का आयोजन करता है और अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के लिए भारतीय टीमों का चयन करता है।

अंतर्राष्ट्रीय

- फेडरेशन इंटरनेशनेल डीश्एस्क्रीम
    - यह अंतर्राष्ट्रीय तलवारबाजी महासंघ है, जिसे आमतौर पर इसके फ्रेंच नाम के संक्षिप्त रूप FIE से जाना जाता है।
    - यह ओलंपिक तलवारबाजी खेल की विश्व गवर्निंग बॉडी है।
    - FIE की स्थापना 1913 में हुई थी और इसका मुख्यालय स्विट्जरलैंड के लॉजेन में है।
    - यह खेल के नियमों को निर्धारित करता है, विश्व चैम्पियनशिप और विश्व कप जैसे प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं का आयोजन करता है, और ओलंपिक में तलवारबाजी के आयोजन की देखरेख करता है।

प्रतियोगिताएँ

राष्ट्रीय प्रतियोगिताएं (National Tournaments/Competitions)

भारत में तलवारबाजी का संचालन फेंसिंग एसोसिएशन ऑफ इंडिया (FAI) करता है। यह संस्था विभिन्न आयु वर्गों में राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं का आयोजन करती है।

- सीनियर नेशनल चैम्पियनशिप (Senior National Championship): यह भारत की सबसे बड़ी राष्ट्रीय तलवारबाजी प्रतियोगिता है जिसमें देश के सर्वश्रेष्ठ फेंसर (Fencers) हिस्सा लेते हैं।
- जूनियर नेशनल चैम्पियनशिप (Junior National Championship): यह जूनियर आयु वर्ग के खिलाड़ियों के लिए होती है, जो भविष्य के सीनियर फेंसर्स को तैयार करने में मदद करती है।
- कैडेट और सब–जूनियर नेशनल चैम्पियनशिप (Cadet and Sub-Junior National Championship): ये प्रतियोगिताएं युवा प्रतिभाओं को बढ़ावा देने और उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने के लिए आयोजित की जाती हैं।
- खेलो इंडिया गेम्स (Khelo India Games): यह भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही एक प्रमुख पहल है जिसमें तलवारबाजी भी एक महत्वपूर्ण खेल है। ये खेल युवा और यूनिवर्सिटी स्तर पर खिलाड़ियों को एक मंच प्रदान करते हैं।
- बिहार में राष्ट्रीय जूनियर तलवारबाजी प्रतियोगिता का आयोजन 2–5 दिसंबर 2024 में पाटलिपुत्र खेल परिसर, कंकड़बाग, पटना में किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताएं (International Tournaments/Competitions)

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तलवारबाजी का संचालन अंतर्राष्ट्रीय फेंसिंग महासंघ करता है। FIE के तहत कई बड़ी प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं:

- ओलंपिक खेल (Olympic Games): तलवारबाजी ओलंपिक खेलों का हिस्सा है। हर चार साल में होने वाले ओलंपिक में पुरुष और महिला दोनों के लिए एपि, फॉइल और साबरे में व्यक्तिगत और टीम स्पर्धाएं होती हैं।
- FIE विश्व चैम्पियनशिप (FIE World Championships): यह हर साल होने वाली सबसे प्रतिष्ठित एकल–खेल तलवारबाजी प्रतियोगिता है। इसमें दुनिया भर के सर्वश्रेष्ठ फेंसर्स हिस्सा लेते हैं।
- FIE विश्व कप और ग्रैण्ड प्रीक्स (FIE World Cup and Grand Prix): ये सीरीज–आधारित प्रतियोगिताएं होती हैं, जो साल भर दुनिया के अलग–अलग शहरों में आयोजित की जाती हैं। इन प्रतियोगिताओं में खिलाड़ियों को FIE रैंकिंग पॉइंट्स मिलते हैं, जो उन्हें विश्व चैम्पियनशिप और ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करने में मदद करते हैं।

- एशियाई खेल (Asian Games): एशियाई खेल भी एक प्रमुख बहु–खेल आयोजन है जिसमें तलवारबाजी शामिल है।
- एशियाई चैम्पियनशिप (Asian Championships): यह एशियाई महाद्वीप के देशों के लिए तलवारबाजी की सबसे बड़ी प्रतियोगिता है।
- सैटेलाइट टूर्नामेंट (Satellite Tournaments): ये छोटे अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट होते हैं, जो युवा फेंसर्स को अंतरराष्ट्रीय स्तर का अनुभव प्रदान करते हैं और उन्हें रैंकिंग पॉइंट्स अर्जित करने का अवसर देते हैं।

भारत और बिहार के खिलाड़ियों का प्रदर्शन

तलवारबाजी (Fencing) में भारत की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्धियाँ धीरे–धीरे बढ़ रही हैं, और इसका सबसे बड़ा श्रेय खिलाड़ी सी. ए. भवानी देवी को जाता है। उन्होंने इस खेल को भारत में एक नई पहचान दिलाई है।

यहाँ भारत की अंतर्राष्ट्रीय तलवारबाजी में कुछ प्रमुख उपलब्धियों का विवरण दिया गया है:

सी. ए. भवानी देवी की ऐतिहासिक उपलब्धियाँ

- ओलंपिक में भाग लेने वाली पहली भारतीयः भवानी देवी ने 2020 टोक्यो ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करके इतिहास रचा। वह तलवारबाजी में ओलंपिक में जगह बनाने वाली पहली भारतीय बनीं।
- एशियाई चैम्पियनशिप में पदकः उन्होंने 2023 में चीन में आयोजित एशियाई फेंसिंग चैम्पियनशिप में कांस्य पदक जीता। यह किसी भी भारतीय तलवारबाज द्वारा सीनियर स्तर की एशियाई चैम्पियनशिप में जीता गया पहला पदक था।
- कॉमनवेल्थ चैम्पियनशिप में गोल्ड मेडलः भवानी देवी ने 2018 और 2022 में कॉमनवेल्थ फेंसिंग चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक जीता, जो कि एक और बड़ी उपलब्धि है।
- अन्य अंतरराष्ट्रीय पदकः उन्होंने 2017 में आइसलैंड में हुई :टर्नोई सैटेलाइट फेंसिंग चैम्पियनशिपः में स्वर्ण पदक जीतकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गोल्ड जीतने वाली पहली भारतीय तलवारबाज बनी थीं। इसके अलावा, उन्होंने कई अन्य प्रतियोगिताओं में भी पदक जीते हैं, जैसे कि 2014 की एशियाई चैम्पियनशिप में अंडर–23 वर्ग में रजत पदक।

अन्य भारतीय तलवारबाजों की उपलब्धियाँ

- जूनियर और कैडेट स्तर पर सफलताः भारत के युवा तलवारबाज भी अंतरराष्ट्रीय मंच पर अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। 2016 की एशियाई जूनियर और कैडेट फेंसिंग चैम्पियनशिप में भारतीय दल ने दो रजत और तीन कांस्य पदक जीते थे।

राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्धियाँ

बिहार के कई युवा तलवारबाजों ने राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पदक जीतकर राज्य का नाम रोशन किया है। यहाँ कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ दी गई हैं:

छपरा के आकाश ने फिर से बिहार के साथ–साथ छपरा जिले का नाम रौशन किया हैए आकाश तलवारबाजी में बिहार को कई बार मेडल दिला चुके हैए इस बार रूस के कजान में आगामी 12 से 23 जून तक आयोजित होने वाले ब्रिक्स गेम्स 2024 में भाग लेने वाली – भारतीय तलवारबाजी टीम में बिहार के छपरा जिला अंतर्गत सदर प्रखंड के विषणपुरा गांव निवासी आकाश कुमार का चयन किया गया है। इसकी सूचना मिलने से परिवार एवं जिले के लोगों में खास खुशी है।

- **केशर राजः मोतिहारी की केशर राज ने कई राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पदक जीते हैं।**
  - उन्होंने अंडर–14 राष्ट्रीय तलवारबाजी प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक हासिल किया है।
  - इसके अलावा, उन्होंने खेलो इंडिया अस्मिता लीग में भी स्वर्ण पदक जीता है।
  - केशर राज को 'खेलो इंडिया एथलीट' के रूप में चुना गया है, जहाँ उन्हें हाई परफॉर्मेंस सेंटर में विशेष प्रशिक्षण और सुविधाएँ मिलेंगी।

- **रवि कुमार यादवः मोतिहारी के ही रवि कुमार यादव ने भी शानदार प्रदर्शन किया है।**
  - उन्होंने खेलो इंडिया यूथ गेम्स 2025 में एपि (Epee) स्पर्धा में कांस्य पदक जीता है।
  - रवि ने 68वीं राष्ट्रीय विद्यालय अंडर–17 तलवारबाजी प्रतियोगिता में रजत पदक भी हासिल किया है।
  - इन्हें भी 'खेलो इंडिया एथलीट' के रूप में चुना गया है।
- आकाशः बिहार के आकाश ने 38वें राष्ट्रीय खेलों में तलवारबाजी में रजत पदक जीता है। यह 26 साल में पहली बार था जब बिहार को राष्ट्रीय खेलों में तलवारबाजी में कोई पदक मिला।
- अन्य खिलाड़ीः बिहार के अन्य खिलाड़ी जैसे जामिल और साक्षी ने भी राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पदक हासिल किए हैं, जिससे राज्य में इस खेल को बढ़ावा मिला है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्धियाँ

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बिहार के खिलाड़ियों की उपलब्धियाँ अभी शुरुआती दौर में हैं। हालाँकि, कुछ खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिभा दिखाई हैः

- रवि कुमार यादव जैसे युवा खिलाड़ी भारत की ओर से कैडेट वर्ल्ड चैम्पियनशिप और एशियन चैम्पियनशिप में हिस्सा ले चुके हैं। हालाँकि, इसमें उन्हें अभी पदक हासिल नहीं हुआ है, लेकिन अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेना ही एक बड़ी उपलब्धि मानी जाती है और यह भविष्य के लिए एक मजबूत नींव तैयार करता है।

तलवारबाजी पर आधारित अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ)

प्र0 1.	**तलवारबाजी क्या है?**
उत्तर	तलवारबाजी एक मुकाबला वाला खेल है जिसमें खिलाड़ी नकली तलवारों का इस्तेमाल करते हैं। यह कला और खेल का मिश्रण है, जिसमें खिलाड़ियों को अपनी फुर्ती, गति और सटीकता का प्रदर्शन करना होता है।
प्र0 2.	**आधुनिक तलवारबाजी के तीन मुख्य प्रकार क्या हैं?**
उत्तर	आधुनिक तलवारबाजी के तीन मुख्य प्रकार हैं: • फॉइल (Foil): इस प्रकार में, खिलाड़ी को केवल प्रतिद्वंदी के धड़ (torso) पर ही वार करने की अनुमति होती है । • एपे (Epee): इसमें खिलाड़ी प्रतिद्वंदी के शरीर पर कहीं भी (सिर से पैर तक) वार कर सकते हैं । • सेबर (Sabre): इस प्रकार में खिलाड़ी प्रतिद्वंदी के शरीर के ऊपरी हिस्से (कमर के ऊपर) पर वार कर सकते हैं, और वार तलवार की धार और नोंक दोनों से किया जा सकता है।
प्र0 3.	**'राइट ऑफ वे' (Right of Way) का नियम क्या है?**
उत्तर	'राइट ऑफ वे' फॉइल और सेबर में इस्तेमाल होने वाला एक नियम है जो यह तय करता है कि किस खिलाड़ी का हमला मान्य है। अंक उस खिलाड़ी को मिलता है जिसने पहले आक्रमण शुरू किया हो। एपे में यह नियम लागू नहीं होता।
प्र0 4.	**तलवारबाजी के मुकाबले में स्कोरिंग कैसे होती है?**
उत्तर	अंक एक इलेक्ट्रॉनिक स्कोरिंग सिस्टम से दर्ज होते हैं, जिसमें खिलाड़ी के कपड़ों पर वार होने से लाइट जलती है। फॉइल और सेबर में, रेफरी 'राइट ऑफ वे' के नियम के अनुसार अंक देते हैं। एपे में, जो खिलाड़ी पहले वार करता है उसे अंक मिलता है। यदि दोनों खिलाड़ी एक ही समय पर वार करते हैं, तो दोनों को अंक मिलता है (इसे 'डबल हिट' कहते हैं)।
प्र0 5.	**तलवारबाजी के लिए आवश्यक सुरक्षा उपकरण क्या हैं?**
उत्तर	खिलाड़ी सुरक्षा के लिए विशेष कपड़े, दस्ताने, और चेहरे पर मास्क पहनते हैं ताकि चोट से बचा जा सके । • मास्कः चेहरे और सिर की सुरक्षा के लिए । • जैकेटः छाती, पेट और बाजुओं को वार से बचाने के लिए । • प्लास्ट्रॉनः जैकेट के नीचे पहना जाता है और कंधे व छाती को अतिरिक्त सुरक्षा देता है। • दस्तानेः हाथ की सुरक्षा के लिए, खासकर हथियार वाले हाथ के लिए । • पैंटः जांघों को चोट से बचाने के लिए । • लेमः फॉइल और सेबर में पहनी जाने वाली एक कंडक्टिव (चालक) जैकेट जो स्कोरिंग मशीन से जुड़ी होती है ।

प्र0 6.	**तलवारबाजी का खेल किस मैदान पर खेला जाता है?**
उत्तर	मुकाबला एक लंबी और संकरी पट्टी पर होता है, जिसे 'पिस्ट' (Piste) कहते हैं। इसकी लंबाई 14 मीटर और चौड़ाई 1.5 से 2 मीटर होती है।
प्र0 7.	**भारत में तलवारबाजी का संचालन कौन सी संस्था करती है?**
उत्तर	भारत में तलवारबाजी का संचालन फेंसिंग एसोसिएशन ऑफ इंडिया (FAI) करती है। यह संस्था राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं का आयोजन करती है और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के लिए भारतीय टीमों का चयन करती है।